चित्रित धूसर मृदभाण्ड (P.G.W.)

Painted Gray Ware Pottery

M.A. IVth Sem.

Paper- Ancient Indian Potteries (E.C.)

Navin Kumar

Professor

Dept. of Ancient Indian History & Archaeology

Patna University

चित्रित धूसर मृदभाण्ड परम्परा के नामकरण से स्पष्ट है कि यह एक ऐसी पात्र परम्परा है जिसके पात्र खण्ड धूसर अथवा स्लेटी रंग के हैं और इनके उपर चित्रण काले रंग से किए गए है। इस पात्र परम्परा की सर्वप्रथम जानकारी बरेली जिले में अहिच्छत्र पुरास्थल के टीले की खुदाई से 1940–44 के बीच हुई। यद्यपि इस समय इसके पुरातात्विक महत्व को भली भांति नहीं आंका गया था लेकिन हस्तिनापुर की खुदाई में इस पात्र परम्परा के पात्र खण्ड द्वितीय काल खण्ड से प्राप्त हुए थे जो प्रथम काल खण्ड से प्राप्त O.C. P.Ware के बाद चित्रित धूसर मृदभाण्ड आता है।

हड़प्पाई स्थल रोपड़ और आलमगीरपुर (मेरठ) के उत्खनन से यह स्पष्ट हुआ कि P.G.W. पात्र परम्परा हड़प्पा सभ्यता के बाद की है। अतिरंजीखेड़ा के उत्खनन से यह जानकारी मिली कि P.G.W.पात्र के पूर्व क्रमशः दो अन्य सांस्कृतियॉ थी प्रथम सांस्कृतिक कालीन O.C.P. और द्वितीय कृष्ण लोहित परम्परा। इस पात्र परम्परा का प्रसार मुख्यतः पंजाब, हरियााणा, उत्तरी राजस्थान और उपरी गंगा धाटी में मिलता है। इस पात्र परम्परा का प्रसार उत्तर में जम्मू कश्मीर में स्थित मांडा से लेकर दक्षिण में मध्य प्रदेश में स्थित उज्जैन तक मिलता है। इसके प्रसार की पश्चिमी सीमा पाकिस्तान के सिंध प्रदेश में स्थित लखियोपीर तक और पूर्वी सीमा बिहार में स्थित वैशाली तक है। नेपाल की तराई में स्थित तिलौराकोट में

इस पात्र परम्परा का पात्र खण्ड मिले हैं। परन्तु पूर्वी क्षेत्र में स्थित कौशाम्बी, सहगौरा (गोरखपुर), वैशाली आदि से प्राप्त ठीकरे के स्वरूप से स्पष्ट होता है कि इन स्थलों में इस पात्र परम्परा का प्रचलन अपेक्षाकृत बाद में हुआ क्योंकि इन सभी स्थलों में इस पात्र परम्परा के पात्र खण्डों की संख्या कम है और बनावट में यह मोटे और चित्रण अभिप्राय कम है। ऐसी ही बात उज्जैन से प्राप्त चित्रित धूसर मृदभाण्ड (P.G.W.) खण्डों के बारे में कही जा सकती है। इन साक्ष्यों से विदित होता है कि इस पात्र परम्परा के निर्माता और प्रयोग करने वाले संभवतः पश्चिम से उत्तर पूर्व एवं दक्षिण की ओर अग्रसर हुए।

चित्रित धूसर मृदभाण्ड अच्छी तरह से गूंथकर तैयार की गई मिट्टी से बनाई जाती थी। अधिकांश पात्र चाक पर बनाए जाते थे यद्यपि हाथ से बने हुए उदाहरण भी यदा कदा उपलब्ध होते हैं। प्रमुख पात्र प्रकारों में कटोरे और थालियॉ उल्लेखनीय है। पंजाब के रोपड़ जिले से प्राप्त लोटा भी एक अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रकार है। इस प्रकार यह पात्र परम्परा भोजनालय से सम्बद्व पात्र परम्परा प्रतीत होती है।

इस प्रकार के बर्तनों पर चित्रण अभिप्रायों में खड़ी तथा पड़ी रेखाएँ, तिरछी रेखाएँ, बिन्दू समूह, सकेन्द्रीकृत वृत, अर्द्ववृत, सिग्मा (Sigma) एवं स्वास्तिक आदि प्रमुख है। चित्रण अभिप्राय अधिकांशत: बर्तनों की बाहरी सतह पर मिलते है लेकिन कभी कभी भीतर एवं बाहर दो तरफ भी अलंकरण मिलते हैं। ये अलकरण सामान्यतः हल्के काले रंग (Matt Black) से बनाए गए हैं परन्तु कभी कभी कत्थई रंग का भी प्रयोग किया गया है। बर्तनों के थोड़ा सूखने तथा पकाने के पहले अलंकरण किए जाते थे। बर्तनों को एक विशेष प्रकार के ऑवा (ऑच) में पकाया जाता है

जिसका तापमान क्रमशः कम होता जाता था। बर्तन सम तापमान पर नहीं पक पाते थे। इसलिए ये प्रायः लाल रंग के न होकर धूसर रंग के हो जाते थे।

चित्रित धूसर पात्र परम्परा के साथ साथ अलंकृत धूसरा पात्र परम्परा (Plain Gray Ware), कृष्ण लोहित पात्र परम्परा (Black and Red ware), कृष्ण लेपित पात्र परम्परा (Black Slipped Ware) तथा लाल पात्र परम्परा के भी प्रमाण मिलते हैं। चित्रित धूसर पात्र परम्परा विशिष्ट एवं भोजनालय से संबंधित पात्र परम्परा थी। अन्य पात्र परम्पराएँ दैनिक कार्यों के उपयोग में आती रही होगी। घड़े, तसले मटके, किनारेदार हॉड़ी, कटोरे, चषक आदि प्रमुख पात्र प्रकार इन उपर्युक्त पात्र परम्पराओं में मिलते हैं।

चित्रित धूसर पात्र परम्परा का कालानुक्रम पुरातात्विक और रेडियो कार्बन तिथियों के आधार पर निर्धारित किया जा सकता है। इस पात्र परम्परा के तिथिक्रम में प्रसिद्व पुरातत्ववेता बी0 बी0 लाल द्वारा हस्तिनापुर के उत्खनन से प्राप्त प्रमाणों का विशेष महत्व है। हस्तिनापुर की चित्रित धूसर पात्र परम्परा के तिथिक्रम के लिए लाल ने उत्तरी काली चमकीली पात्र परम्परा के तिथिक्रम को भी एक आधार बनाया था। लाल के अनुसार तक्षशिला, कौशाम्बी तथा अहिच्छत्र के साक्ष्यों के आधार पर एन0 बी0 पी0 की प्राचीनतम सीमारेखा छठी शताब्दी ई0 पूर्व निर्धारित की जा सकती है। हस्तिनापुर के N.B.P. के पात्र परम्परा के आरंभ और P.G.W. पात्र परम्परा के अन्त के बीच में समय का अन्तराल था। N.B.P. पात्र परम्परा और धूसर पात्र परम्परा के सांस्कृतिक उपादानों में अत्यधिक अन्तर के आधार पर लाल ने इस व्यवधान (Gap) के लिए 200 वर्ष का समय

निर्धारित किया था। हस्तिनापुर में P.G.W. पात्र परम्परा का अन्त इस प्रकार 800 ई0 पूर्व के लगभग निर्धारित किया गया। P.G.W. पात्र परम्परा के स्तरों का औसत निक्षेप 1.50 से 2.10 मीटर तक मिला है। P.G.W. पात्र परम्परा के इस सांस्कृतिक जमाव के लिए 300 वर्षों की अवधि अनुमानित की गई। इस प्रकार हस्तिनापुर में चित्रित धूसर पात्र परम्परा की तिथि 1100 ई0 पूर्व से 800 ई0 पूर्व के मध्य निश्चित की गई। लाल का मत है कि इस पात्र परम्परा के प्रयोक्ता सरस्वती-दृषवती की धाटियों मे पहले आए तथा सतलज यमुना के मध्यवर्ती क्षेत्र में बाद में पहुॅचे इसलिए उत्तरी राजस्थान में इसकी प्राचीनतम सीमा रेखा 1200 ई0 पूर्व के आस पास खींची जा सकती है।

रोपड़ में चित्रित धूसर पात्र परम्परा की तिथि पुरातात्विक साक्ष्यों के आधार पर लगभग 1000 ई0 पूर्व से 700 ई0 पूर्व के मध्य निर्धारित की गई है।

कौशाम्बी के उत्खनन से भी चित्रित धूसर पात्र परम्परा का पुरातात्विक साक्ष्यों के आधार पर तिथिक्रम निर्धारित करने में कुछ सहायता मिली है। यहॉ पर विभिन्न पुरातात्विक सांस्कृतिक कालों के मध्य से एक निरंतरता मिलती है। कौशाम्बी में चित्रित धूसर पात्र परम्परा के काल को द्वितीय सांस्कृतिक काल का कहा गया है। N.B.P. पात्र परम्परा के आरंभ का समय 605 ई0 पूर्व निर्धारित किया गया है जिसको चित्रित धूसर पात्र परम्परा की समाप्ति की तिथि माना जा सकता है। कौशाम्बी में चित्रित धूसर पात्र परम्परा की तिथि 885 ई0 पूर्व से लेकर 605 ई0 पूर्व के मध्य निर्धारित की गई है।

कई उत्खनित पुरास्थलों से चित्रित धूसर पात्र परम्परा से संबंधित स्तरों की रेडियो कार्बन तिथियॉ उपलब्ध हैं। इन पुरास्थलों में हस्तिनापुर,

अतिरंजीखेड़ा (उत्तर प्रदेश का एक जिला), अहिच्छत्र (बरेली, उत्तर प्रदेश) तथा नोह आदि विशेष रूप से उल्लेखनीय है। कार्बन तिथियॉ इस संस्कृति की कालावधि को 800 ई0 पूर्व से 400 ई0 पूर्व के मध्य निर्धारित करती है।

इस प्रकार उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि चित्रित धूसर पात्र परम्परा का तिथिक्रम विवादपूर्ण है। इस संबंध में किसी निश्चित निष्कर्ष तक पहुॅचने के लिए उपलब्ध साक्ष्य पर्याप्त नहीं हैं उपलब्ध साक्ष्यों के आलोक में इसका तिथिक्रम 1000 ई0 पूर्व से 600 ई0 पूर्व0 के मध्य निर्धारित किया जा सकता है।